नुष्य बनो

3/76

बा
५-

रणा गति

ुभ संकल्प,

ा,

प्रेम,

म कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

ा फकीरचन्दजी महाराज
वता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

'मनुष्य बनो' के नियम

१— शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, स सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। बनना और बनाना।

२— सन्त महात्माओं और ऋषियों की बाणी को सरल, सुबोध और रण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे ज।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पाद होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ५-२५

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेंगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैं के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

देवीचरन मीतल

सम्पादक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदंः पूर्णात्पूण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण नेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष २६ | माह सं० २०३२ वि० मार्च, १९७६ | संख्या ६

स्तुति

तेरी गति मति कौन लखै ।

वेद न जाने महिमा तेरी, ऋषि मुनि फिरें भरम की फेरी ।
शारद तेरे दर की चेरी, आनहिं आन बके ॥१॥
अपरम्पार पार निः पारा, तू ही सार असार का सारा ।
अजर अमर अविनाशी प्यारा, घट-घट व्याप रहे ॥२॥
नहीं एक और नहीं अनेका, सब विधि किया विचार विवेका ।
भूले ज्ञानी ध्यानी भेषा, कोई न मर्म लहे ॥३॥
तू प्रकाश है तू परछाईं, तू ही परम तत्व है झाईं ।
कैसे स्तुति करूँ गुसाईं, सुध-बुध भरम बहे ॥४॥
अनहित सहित सकल हितकारी, निराधार तू जगधारी ।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, सेवक शरण चहे ॥५॥

———

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र)

समाचार पत्र [केन्द्रीय] अधिनियम १९५६ [नियम ८ फार्म के अनुसार आवश्यक सूचना

१. प्रकाशन का स्थान	अलीगढ़
२. प्रकाशन अवधि	मासिक
३. मुद्रक का नाम	सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	लेखराज नगर अलीगढ़[उ.प्र
४. प्रकाशक का नाम	देवीचरन मीतल
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	लेखराजनगर, अलीगढ़[उ.प्र
५. सम्पादक का नाम	देवीचरन मीतल
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	लेखराजनगर अलीगढ़ [उ.प्र
६. स्वत्वाधिकारी	देवीचरन मीतल
संरक्षक	परमदयाल फकीरचन्दजी महारा

७. मैं देवीचरन मीतल यह घोषित करता हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही है

१-३-७६

देवीचरन मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

आँखों के डाक्टर की आवश्यकता

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब) के आँखों के अस्पताल के लिये एक अनुभवी या रिटायर्ड डाक्टर की आवश्यकता है जो आँखों का आपरेशन भी कर सके। यदि कोई डाक्टर सेवा भाव से काम करना चाहें तो उनका स्वागत है अथवा उचित वेतन भी दिया जायगा। इसके लिये निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

सैक्रेटरी
मानवता मन्दिर
सुतैहरी रोड, होशियारपुर (पंजाब)

एक बार अवश्य पढ़ लीजिये

१—बार बार लिखने पर भी ग्राहकों ने अभी तक चन्दा नहीं भेजा है। दो दो साल का चन्दा बाकी है। अब उनसे निवेदन है कि वे तुरन्त चन्दा भेज दें। अगला अंक चन्दा प्राप्त होने पर ही भेजा जायगा क्योंकि ग्राहक महोदय इस ओर ध्यान नहीं देते। अन्त में बहुतसा चन्दा मारा जारहा है।

२—जो ग्राहक चन्दा भेजते हैं वे अपना पुराना नाम पता व ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें। नये नाम व नये पते से भेजने पर उनका नाम दुबारा दर्ज हो जाता है। इससे अन्त में पत्रिका की हानि होती है। ग्राहकों को चाहिये कि जिसके पास दो पत्रिकायें गलती से जाती हैं वे या तो एक लौटादें या दूसरा ग्राहक बनावें या दो प्रतियों का चन्दा स्वयं दें।

३—जिनको किसी महीने का अंक डाक विभाग की गड़बड़ी से न मिले उनको तुरन्त डाकखाने में लिख कर शिकायत करनी चाहिये और हमको लिखदें। हम दुबारा भेज देंगे। ४—६ महीने बाद लिखेंगे तो भेजना कठिन होगा।

१४ वां बैशाखी वार्षिकोत्सव

(मानवता मन्दिर होशियारपुर)

सज्जनो ! इस वर्ष बैशाखी के अवसर पर दिनांक १३ व १४ अप्रैल १९७६ मंगलवार व बुधवार मानवता मन्दिर का वार्षिकोत्सव सेठ दुर्गादास जी चंडीगढ़ निवासी की अध्यक्षता में होगा।

मनुष्य को अपनी, सामाजिक तथा देश की शान्ति के लिये जिस ज्ञान, अनुभव और कर्तव्य की आवश्यकता है उसकी व्याख्या परमसन्त फकीरचन्दजी महाराज अपने ८९ वर्ष के जीवन के अनुभव के आधार पर करेंगे। इस विषय में निम्न बातों पर प्रकाश डालेंगे—

१—मैं कौन हूं।

२—संसार क्या है।

३—ईश्वर परमेश्वर ब्रह्म परब्रह्म और सत आदि क्या हैं। इसके अतिरिक्त दूसरे धर्मों और सन्तमत के आचार्य भी इस विषय पर अपने विचार प्रगट करेंगे, बाहर से आने वाले सज्जनों के लिये निवास और भोजन का प्रबन्ध यथाशक्ति फकीर लायब्रेरी ट्रस्ट करेगा। आने वाले सज्जन अपना बिस्तर साथ लावें।

चूंकि यह कोई मेला या नुमायश नहीं है इसलिये केवल जिज्ञासु और अधिकारी सज्जन ही पधारें।

विनीत
सैक्रेटरी मानवता मन्दिर
सुतहरी रोड, होशियारपुर

सत्संग का समय

१३—४—७६—प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक
" " ७६ सायं ४ बजे से ३ बजे तक
१४—४—७६ प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक
" " " सायं ४ बजे से ६ बजे तक

माता भागवती देवी के जीवन की झांकी

माता भागवती देवी परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज क
धर्मपत्नी थीं। उनके जीवन वृत्तान्त देने के कई कारण हैं। सब
मुख्य तो यह है कि उनकी मृत्यु पर परिवार के लोगों के कहने प
गरुड़ पुराण की कथा रखाई गई और जिसे महाराज जी ने
सुना। उसके सुनने पर उसके गुप्त रहस्यों को महाराज जी ने विज्ञा
तथा निज अनुभव के आधार पर वर्णन किया है। दूसरा कारण य
है कि जो लोग इस पुस्तक को पढ़ेंगे और इसमें माता जी का उल्ले
आयेगा तो उनके हृदय में उनके बारे में जानने की लालसा पै
होगी। तीसरी बात यह है कि ऐसे परमपुरुष की पत्नी के बारे
जानने की उत्कंठा हर एक को रहती है इसलिये उनका वृत्तान्त दि
जाता है। उनके जीवन का संक्षिप्त विवरण मेरी प्रार्थना प
महाराज जी ने स्वयं लिखकर भेजा है जो आगे दिया जाता है कि
मैंने भी १०-१२ वर्ष के समय में जो उनके बारे में जाना उसको बि
लिखे रह नहीं सकता।

जब में पहिली बार होशियारपुर गया था तो महाराज जी के पास घर पर ही ठहरा था। उस समय जिस प्रेम भाव से मेरी मां व्यवहार करती थी, उसी ढंग से चौके में पास बिठा कर खाना खिलाया और पुत्रवत व्यवहार किया। उस समय ही मैंने यह समझा कि वही मेरी माँ हैं। उनके चेहरे से सचाई और भोलापन टपकता था। हृदय में छल कपट के लिये कोई स्थान नहीं था।

मैंने यह भी देखा कि वह और लोगों से भी बड़े प्रेम से व्यवहार करती थीं। सेवा भाव उनमें कूट कूट कर भरा था। महाराज जी ने अपने बचनों में स्वयं स्वीकार किया हैं कि एक समय था जब २५-२५, ३०-३० सत्संगी दोनों समय प्रतिदिन इनके यहाँ ठहरे रहते थे और माता जी सारा दिन उनके भोजन आदि बनाने में लगी रहती थीं और यह सिलसिला १०-१२ साल तक बराबर चालू रहा मगर कभी कोई शिकायत जुबान पर नहीं लाईं।

एक बड़ा गुण उनमें यह भी था कि वे कभी बेकार नहीं रहती थी। हर समय काम में लगी रहती थी। अवकाश के समय में विशेष कर वह चरखा काता करती थीं। अन्तिम दिन भी वे कते हुये सूत की पिंडे शाम तक बनाती रहीं और थक कर सो गईं।

उनके जीवन की एक मुख्य घटना है जो मुझे श्रीगोपालदास जी से ज्ञात हुई। एक समय जब महाराज जी सुनाम स्टेशन पर स्टेशन मास्टर थे तो वहाँ एक सेठ ने एक नया आलीशान मंदिर बनवाया था। पड़ौस की स्त्रियाँ वहाँ माता जी को लिवा ले गईं। वहां पर एक महन्त रहता था। सब स्त्रियों ने उस महन्त के पैर छूये मगर माता जी ने उन सबके आग्रह पर भी उनके पैर छूने से मना कर दिया और कहा कि मैं सिवाय पति के और किसी के पैर नहीं छूती।

उनके जीवन की इतनी घटनायें हैं कि यदि लिखा जाय तो

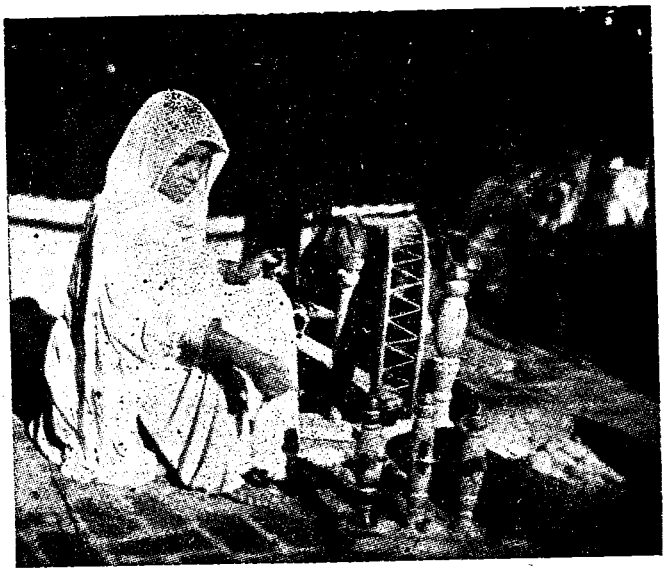

धर्मपत्नि दयाल फ़क़ीर चन्द जी महाराज, होशियारपुर

धर्मपत्नि दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज, होशियारपुर

क बड़ी पुस्तक बन जायगी। यहाँ केवल शिक्षाप्रद बातों का
ावश्यक समझ कर दिया है, आगे जो वृतान्त महाराज जी ने स्वयं
पनी लेखनी से लिखा है वह दिया जाता है।

(देवीचरन मीतल)

(परम संत दयाल फकीरचन्द जी महाराज द्वारा)

मेरी स्त्री भागवती दिनांक १५-१२-६३ को परलोक सिधार गई। ंने गरुण पुराण का रहस्य अपनी स्त्री की मृत्यु पर लिखा क्योंकि ीवन में पहिली बार मुझे गरुड़ पुराण के सुनने का अवसर मिला ं। इसी क्रम में देवीचरन ने लिखा कि मैं उनके जीवन पर कुछ ाकाश डालूं, इसलिये लिख रहा हूं।

मेरी शादी सन् १६११ ई० में हुई। दिन याद नहीं है। इतना ाद है कि उस दिन अंग्रेज सम्राट दहली आया था और उसका ंरबार हुआ था। शायद दिसम्बर का महीना था। मैं विवाह करना नहीं चाहता था। विचार साधन और अभ्यास की ओर थे। दाता ंयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज उस ममय अमेरिका में थे। उनकी आज्ञा भी नहीं ले सकता था। पिता जी के मजबूर करने पर रजामन्द हो गया।

पहिली बार मैं जब अपनी स्त्री से मिला तो मैंने कहा कि भागवान! मैं निर्धन हूं। सम्भव है मैं तुम्हारी सांसारिक आवश्यकताओं को पूरा न कर सकूं, इसलिये यह समझ लेना कि हम दोनों घर के नौकर हैं। हमने केवल रोटी और कपड़ा ही लेना है। उसके पिता ने भी अपनी लड़की को भी यही कहा था कि फकीरचन्द को किसी वस्तु के लिये तंग न करना। इस स्त्री ने जीवन भर सादा वस्त्र और साधारण भोजन के सिवाय मुझसे कभी कुछ नहीं मांगा। उसको थोड़ी बहुत बीमारी रहती थी मगर जब तक रोग के कारण

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

बेबश नहीं हुई उसने कभी इलाज नहीं कराया ताँकि खर्च... ह

मेरे माता पिता की अत्यन्त सेवा की, यहां तक कि दाता द ने प्रयत्न किया कि उसका पासपोर्ट बनवा कर बगदाद उसको दें मगर उसने मेरे पिता की सेवा को अधिक आदरणीय समझा घर नहीं छोड़ा। कुटुम्ब परवर बहुत थी। मेरे भाई के ब की बहुत कुछ सेवा की। उसका फल यह हुआ कि गोपालदा उसकी ७ साल निस्वार्थ शारीरिक सेवा की।

वह आत्मा-भिमानी थी। किसी की अनुचित बात को सहन कर सकती थी। दाता दयाल ने उसको यह आज्ञा दे रक्खी थी यदि कोई अनुचित रूप से बुरा भला कहे तो वह एक के बदले सो सुनावे। इस पर वह जीवन भर आरूढ़ रही।

इनको पहिले कर्मों के कारण साधारणतया डरावने स्वप्न आ करते थे। दाता दयाल इसे नाम नहीं देना चाहते थे मगर मेरे करने पर उन्होंने नामदान प्रदान कर दिया। साधन के समय अभ्य में भय लगा करता था। दाता दयाल को लिखा। उत्तर मिला थ प्रालब्ध कर्म ऐसे ही हैं। अभ्यास छोड़ दो। तुम्हारी संगत से व कट जायेंगे।

मैं १२ वर्ष बसरा बगदाद रहा। अपने विचारों के कारण गृह से विरक्त रहता था मगर इस समय में जब वह युवा थी किसी त की शिकायत मुझे या मेरे माता पिता को नहीं हुई। आज २४ व से मैं और वह बहैसियत पति और स्त्री नहीं थे। उसने मुझे खुशी इजाजत दी हुई थी।

यद्यपि वह अभ्यास साधन आदि नही करती थी मगर उसव विश्वास मालिक पर अवश्य था। मैं भक्त होता हुआ तथा ज्ञानवा होता हुआ कभी-कभी घबराया करता था मगर वह नहीं घबरा बल्कि मुझे हौसला दिया करती थी। वह मेरे स्वाथ्य और खाने पी

बड़ा भारी ख्याल रखती थी। बीमारी की दशा में भी ल
नौकर को हमेशा मेरे भोजन की बावत हिदायत करती रहती
।

पिछली उम्र में उसको सत्संगियों से स्वतः ही गैरियत आ गई
विशेषकर स्त्रियों से, क्योंकि जब यह लोग मुझे अपने अज्ञान की
क्त के कारण अधिक तंग करते थे तो वह व्याकुल हो जाती थी
र बीमारी से पहिले इसने सत्संगियों की बहुत सेवा की थी।
ने बच्चों और घर से मोह अधिक रखती थी।

दाता दयाल ने उसकी हर तरह से संभाल की। एक बार ढाई
ार रुपया प्रसाद के रूप में उसको वापिस किया। ३५ वर्ष के
द बीस हजार रुपया मेरी स्त्री को दे गये। किसी समय दाता
ाल के संकेत के अनुसार मुझे कई जगह दान देने की आवश्यकता
ी। इसने पहिले बैंक से रुपया निकलवा कर भेजने को कहा मगर
कि वह रुपया दाता दयाल ने उसको दिया हुआ था और कहा था
फकीर ! अपना कमाओ और खाओ। यह रुपया भागवती की
न्तान के लिये हे। (ओह दाता दयाल ! तेरी याद आती है तो आंसू
ा जाते हैं)। मैंने उसे स्वीकार नहीं किया। तब उसने अपने कुल
वर जो मैंने बसरा की नौकरी से बनवाये थे मुझको दे दिये और
शी से दिए। इसका फल उसको यह मिला कि मैंने उसकी बीमारी
र काफी रुपया खर्च किया और यह रुपया गिरधर सिंह वारगल
ावासी ने मुझको उसके इलाज के लिये दिया। मगर मित्रो ! मैंने
या और खर्च किया। कई बार मेरी स्त्री ने कहा—"जब जबान
, कमाते थे अपना रुपया पानी की भांति बांटा। अब बुढ़ापे में दुम
ुलाकर सत्संगियों से लो ! उसके शब्द कठोर हुआ करते थे मगर
सच्चे !"

मैंने आवेश में या फकीरी के भावों के कारण रुपये की परवाह

नहीं की। सन् १९१६ ई० तक तो निर्धनता ही निर्धनता रही। १९१९ तक सब रुपया माता पिता की भेंट होता रहा। इसके पश्
दाता दयाल ने संभाला।

उसके मरने के बाद घर के भिन्न भिन्न ट्रंकों में से ३९७९) निकले। इसमें से कुछ रकम उसके लड़के ने दी हुई थी और उसने किफायतशारी करके जोड़ा हुआ मालुम होता है। मेरे। वह रकम एक बड़ी नियामत है। दाता की आज्ञा है कि फकीर अ जीविका आप कमाओ। अब बुढ़ापा आ गया। अपनी रोटी व लेता हूं मगर कब तक, मेरी स्त्री का भला हो जिसने मेरे प्रण निवाहने के लिये वह रकम इकट्ठी करके मेरे लिये छोड़ गई।

मैं महसूस करता हूं कि मैं अपना कर्त्तव्य पूरी तरह नहीं निव सका, यद्यपि मैंने अपनी ओर से अपने सच्चे हृदय से अपने ख्याल अनुसार सच्ची हमदर्दी और सेवा की है मगर वह एक सच्ची स्त्र की हैसियत में अपना कर्त्तव्य पूरा कर गई और अन्त समय बि किसी कष्ट के या शारीरिक गति के प्राण त्याग गई।

* इति *

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर २१-१२-७५)

बुढ़ापा आगया । मानसिक समता भी अब वह नहीं रही जो हले थी । अब मैं यह सत्संग का काम करता हूं । अपनी आत्मा ा पूछता हूं कि तूने क्या किया फकीर ? बचपन से राम को मिलने ी तलाश थी जहां से मैं आया हूं । मैं अपने उस आधार को देखना ाहता था । मौज मेरे कर्म या भगवान की इच्छा इस तलाश के सलसिले में मुझे हुजूर दाता दयालजी महाराज के चरण कमलों में ागई । वहां से मुझे सन्तमत मिला । उन्होंने राम और मालिक को ुछ और ही कहा । उस मालिक को ढूंढ़ने में आयु बीत गई । ालिक क्या है ? हुजूर दाता दयालजी महाराज के द्वारा सुनो—

तेरा भेद न जाने हाय, जगत धोखे में रहा ।।
बिन बानी का शब्द है, बिना अक्षर का ग्रन्थ ।
बिन मन बुद्धि विवेक है, बिना डगर का पंथ ।।
कोई केसे आवे जाय, भरम की धार बहा ।
सत्त तत्व के सिखर पर, द्वेत अद्वैत न कोय ।।
मन चिउँटा फिसला गिरा, बुद्धि माखी रहे सोय ।
चित पंछी न उड़ाय, बहु दुख कष्ट सहा ।।
बिन बादल पानी बरस, बिना बूंद का मेह ।
भीजे तन मन सहज में, नगर ग्राम और गेह ।
चहुँ ओर बरसाय घटा, छाई है महा ।।
मन अलसाना अमन बन, बुद्धि बनी अबुद्ध ।
चित अचेत चेत नहीं, कैसे पावे शुद्ध ।
नहीं सूझे जतन उपाय, किसने मर्म लहा ।।

'नेति नेति' कोई कहे, एति एति' कहे कोय ।
जब सतगुरु भये सहाय, राधास्वामी चरन गहा ।।

ऐ भारत वासियो ! मेरे मिलने वालो !! यदि मैं जीवन दिवाना बना और खोज की तो क्या मैं नहीं था ? हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने इस प्रकार से लिख दिया और स्वामीजी महाराज ने इस प्रकार लिखा है—

नहिं खालिक मखलूक न खिल्कत, कर्ता कारन काज न दिक्कत
दृष्टा दृष्ट नहीं कुछ दरसत, बाच लक्ष नहिं पद न पदारथ ।।
जात सिफात न अब्वल आखिर, गुप्त न परगट बातिन जाहिर ।
राम रहीम करीम न केशों, कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो ।

मैं राम को मिलने के लिए इस मार्ग पर आया था । उसका भेद तब मिला जब मैं राधास्वामी के चरणों में गया । जब तक कोई उसके चरणों में नहीं जाता कोई इस भेद को पा नहीं सकता हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने अपने शब्द में लिखा है कि—

जब सतगुरु, भये सहाय, राधास्वामी चरन गहा ।।

सतगुरु ने कैसे सहाय किया ? मैंने अपने आपको समय का सन्त सतगुरु कह कर इस संसार में प्रकट किया है । मैं अपना कर्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूं । सत्गुरु जो सहायता करता है, मैं वह सहायता कर जाना चाहता हूं । जिनके भाग्य में है वे वहां पहुंचेंगे । जिनके भाग्य में नहीं है उनको मैं कुछ नहीं कर सकता । गुरु उसको सहायता करता है जिसकी बुद्धि उस मालिक को तलाश करती है । सतगुरु उसकी बुद्धि को साफ कर देता है । जिसकी बुद्धि साफ होगई वह वहां अवश्य जायेगा । मुझे छोटी आयु में रामायण से यह विचार मिला था कि वह भगवान या मालिक इस संसार में राम या कृष्ण के रूप में आता है । इसलिये मैं राम या कृष्ण की मूरत बना कर उससे प्रेम किया करता था और राम और कृष्ण मेरे अन्तर और मेरे सामने साक्षात रूप में प्रकट होकर मेरे साथ

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ात चीत किया करते थे। मगर अनुभव ने सिद्ध किया कि ५९
ाम या कृष्ण जो मेरे सामने प्रकट होते थे वह मालिक नहीं था।
यह मुझे कैसे सिद्ध हुआ ? एक बार मैं एक धार्मिक मेला देखने
गांगानवाला एक स्थान है वहां गया। वापसी पर आगे-आगे कृष्ण
ंसरी बजाता हुआ चल रहा था और उसके पीछे मैं था। मार्ग में
गोबर पड़ा था। कृष्ण ने मुझे कहा कि यह गोबर खालो। मैं वहां
बैठ गया और उस गोबर को खागया। जब मैं वापिस अपने क्वार्टर
पर आगया तो सोचने लगा कि किसी भक्त को राम या कृष्ण ने
आज तक यह नहीं कहा कि तू गोबर खा ले। यह क्या बात है।
मुझे यह विचार बैठ गया कि यह मालिक नहीं है, क्योंकि रामायण
से विचार मिला हुआ था—

नाना भांति राम अवतारा, रामायण सत कोट अपारा।

२४ घन्टे लगातार रोने के बाद हुजूर दाता दयालजी महाराज के चरणों में मौज ने पहुंचा दिया। फिर उनका रूप मेरी सहायता करता रहा। सन्तमत की बाणियों में मालिक का रूप जो बताया गया है, मैं उसको देखना चाहता था। हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने १९१८ में मुझे फरमाया ! मेरी आज्ञा मानो, नाम दान दिया करो और सत्संग कराया करो। तुमको निज रूप राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे। इस जनून में आयु बीत गई। अब तुम लोगों के अनुभवों ने सिद्ध कर दिया कि हुजूर दाता दयाल जी महाराज का जो रूप मेरे अन्तर प्रकट होता था व मालिक नहीं था। कैसे ? मैं इस बार दिल्ली गया। सूबेदार हजारीसिंह ने मुझे अपनी घटना सुनाई। वह कहता है कि कमर की पीड़ा के कारण मुझे बहुत कष्ट हुआ। मुझे हस्पताल लेगए लेकिन कोई आराम न हुआ। फिर वह कहता है कि मैंने आपको बहुत गाली दीं कि आप पहले मेरी सहायता करते रहते थे लेकिन अब क्यों नहीं करते। हस्पताल वालों ने पूछा कि किसको गा

दे रहे हो तो मैंने बताया कि होशियारपुर का बाबा फकीर स
मेरी सहायता करता है लेकिन मेरी पीड़ा को दूर नहीं कर र
इसलिये उसको गाली दे रहा हूं। आखिर गाली देते देते थकक
सोगया। वह कहता है कि उस समय आपका रूप मेरे अन्तर प्रक
हुआ और आपने मुझसे पूछा कि क्या बात है। मैंने कहा कि कम
में बहुत पीड़ा है। आप मुझे पकड़ कर गंगा के किनारे लेगये
पानी बहुत ठंडा था। लोग इकट्ठे होगये। कहने लगे कि इस ठं
पानी में नहाने से यह मर जायगा। आपने गीला तौलिया लेक
मेरा सारा शरीर साफ किया। फिर जब मुझे जाग आई तो पीड़
नहीं थी और मैं बिलकुल ठीक होगया। अब मैं तो गया नहीं और
न ही मुझे पता है। वह असली मालिक नहीं है। वह तो हमारा मन
का बनाया हुआ रूप है और हमारे ही विश्वास का पैदा किया हुआ
ईश्वर है। किसी ने राम के रूप में उसे मान लिया। राम ने उसकी
सहायता करदी। किसी ने कृष्ण के रूप में उसको मान लिया उसकी
कृष्ण ने सहायता कर दी। जिसने बाबे फकीर के रूप में मान लिया
उसकी बाबे फकीर ने सहायता करदी। जिस रूप में किसी ने मान
लिया उसी रूप में उसकी सहायता होगई। इसलिये यह तुम्हारा
पैदा किया हुआ ईश्वर है। यह असली मालिक नहीं है। वह तुम्हारा
अपना ही संकल्प है।

कल सरसा से एक महिला आई हुई है। बारह चौदह साल
पहले उसके लड़के का विवाह हुआ था। कोई बच्चा नहीं हुआ।
डाक्टरों ने कह दिया कि इस स्त्री की बच्चा दानी सड़ चुकी है।
इसलिए इसको बच्चा नहीं हो सकता। पिछले साल वह लड़की
मानवता मन्दिर के लिये झंडा बना कर लाई और मुझे दे दिया।
मैंने कहा कि बेटी ! जिस भाव को लेकर तू आई है तेरी मनो-
कामना पूर्ण हो। मुझे तो पता नहीं था कि इसके बच्चा नहीं है या
डाक्टरों नें इसको क्या बतलाया है। आज उसको बच्चा होने वाला

है। वह लड़की कहती है कि मैं जब झंडा लेकर गई थी तो मैंने उस समय यह सोचा कि मैं बाबाजी से कुछ नहीं मागूंगी। जो कुछ वह अपनी मौज से फ़रमायेंगे मेरे लिये वह अच्छा होगा। जब मेरे मुँह से यह निकल गया कि "तेरी मनोकामना पूर्ण हो" तो उसको विश्वास होगया कि मेरी इच्छा अवश्य पूरी होगी और इच्छा उसको बच्चे की थी। क्या मैंने उसे बच्चा दिया ? नहीं। सारा खेल जीव के अपने विश्वास का है। प्रति दिन मुझे ऐसे पत्र आते रहते हैं। कोई कुछ लिखता है और कोई कुछ लिखता है। अब मैं अपने आपसे पूछता हूं कि तू तो मालिक से मिलने निकला था। क्या तुम किसी के अन्तर जाते हो और लोगों के काम करते हो ? नहीं। कौन जाता है और कौन काम करता है ?, जीव का अपना ही विश्वास और कर्म। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा, इसलिए कहता हूं कि ऐ मानव ! मालिक तो रहा एक ओर, मालिक को मिलना तो बहुत दूर है। यदि तुम संसार में सुखी रहना चाहते हो और सांसारिक वस्तुयें चाहते हो तो अपनी आस, अपने विश्वास अपने विचार और अपनी नीयत को ठीक रखो। तुम्हारे विचार में बहुत शक्ति है। मालिक को मिलना तो सबके भाग्य में नहीं है—

नानक कोटन में कोऊ न रायण जिन चेत।

Reader's pigest में एक आर्टिकल छपा है। उसमें लिखा है कि असराइल का एक लड़का योरीगेलर है। वह बचपन से ही साधना किया करता था। अब उसकी will power इतनी शक्तिशाली होगई है कि यदि वह लोहे के किसी सलाख को हाथ लगा देता है तो वह लोहा टेढ़ा हो जाता है। लोगों ने टेलीवीजन पर उसका भाषण सुना। सुनने वालों के हाथ में यदि कोई लोहे की वस्तु थी चाकू था या स्त्रियों के हाथों में किसी धातु की चूड़ियाँ थीं तो सब टेढ़ी होगईं। विज्ञानक इस बात से बहुत चकित हैं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

फिजिक्स वाले अब यह कहते हैं कि उसके मन में बहु शक्ति है और इसमें कोई धोखे की बात नहीं है। तो सिद्ध हुआ कि शरीर से अधिक मन के विचार में शक्ति है। हुजूर दाता दयालजी महाराज भी यही फरमाया करते थे कि जैसा ख्याल वैसा हाल जैसी मति वैसी गति और जैसी करनी वैसी भरनी और यही मैं कहता हूं कि अपने विचार को ठीक रखो। तनिक सोचने की बात है कि तुम स्वप्न में डर जाते हो। उस समय तुम्हारी जुबान भी हिलती है, हाथ पाँव भी हिल जाते हैं, स्वप्न में किसी को मुक्का भी मार देते हो, कल्पित स्त्री भी बना लेते हो, वीर्य भी पात हो जाता है। तो इससे सिद्ध हुआ कि तुम्हारे मन में बहुत शक्ति हैं। जब तुम राम, कृष्ण देवी देवता या किसी गुरू का ध्यान करते हो तो यह मन को इकठ्ठा करने का एक ढंग है। जिस प्रकार का विचार लेकर तुम अभ्यास करोगे तुम्हारे उस विचार को शक्ति मिलेगी और वह पूरा होगा। इसलिये जो लोग अभ्यास करते हैं उनको चाहिये कि वह अपने विचारों को ठीक रखें वरना यदि तुम्हारे अन्तर में बुराइयां हैं तो साधन से वह बुराइयां और अधिक बढ़ जायेंगी और इससे दूसरों की भी हानि होगी और उसका फल क्या होगा ? तुम्हारी भी हानि होगी। यही कारण है कि मैं दूसरे गुरुओं की तरह नाम नहीं देता क्योंकि मैं जानता हूं कि जीवों के मन तो साफ नहीं हैं जब वे साधन करेंगे और मन को इकट्ठा करेंगे तो उनके अन्तर जो बुराइयां हैं वे और अधिक बढ़ जायेंगी और उनकी हानि हो जायेगी। इसलिये नाम दान सबके लिये नहीं है। नाम दान का अधिकारी कौन है ?

विषयों से जो होय उदासा परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके, जगत पदार्थ चाह न ताके ॥
तन इन्द्री आसक्त न होई, नींद भूख आलस जिन खोई।
विरह बान जिन हृदय लागे, खोजत फिरें साधु गुरु जा के।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

यह परमार्थिक नाम है मगर जिनको संसार चाहिए वे सु
ध्यान करें। जिस प्रकार की आस लेकर अभ्यास करोगे वह तुम्हारी
आस पूरी होगी। चूंकि हमारी आस इच्छा एक नहीं होती कभी
कोई इच्छा है और कभी कोई इच्छा है, इसलिए सफलता नहीं
होती। कई लोग कहते हैं कि हम अभ्यास करते हैं हमारी इच्छा भी
एक ही है मगर वह पूरी नहीं होती। सुनो! जो तुम्हारे पहले
विचार हैं या तुम्हारी पहली आशायें हैं उनको भोगने के बाद फिर
दूसरी आशाओं की बारी आयेगी और फिर उनका फल मिलेगा।

पहले काफी समय सत्संग करना चाहिए ताकि तुमको पहले
समझ आ जाये और तुम सोच समझ के साथ अभ्यास करो। पहले
अपना Aim Object बनाओ। मैंने राम को मिलने के लिये अभ्यास
किया था। अब तुम लोगों के अनुभवों से मुझे पता लग गया कि यदि
मैं मन के चक्कर में रहूंगा तो मैं अपने आदि घर नहीं जा सकता।
इसलिये जानकर मैं कोई सिद्धि नहीं करता, स्वाभाविक हो जाती है
और वह भी दूसरों के विश्वास अनुसार। आदमी के विचार में बहुत
शक्ति है। यदि साईं बाबा अपने विचार से या अपने विचार की
शक्ति से विभूति निकाल सकता है तो यह सम्भव है। मगर सिद्धि
शक्ति करने वाला जनम मरण के चक्कर से नहीं बच सकता। साईं
बाबा ने स्वयं कहा है कि वह पिछले जन्म में सरड़ीवाला साईं बाबा
था और मरने के बाद फिर जन्म लूँगा। संसार सिद्धि शक्ति में
पड़कर और सिद्धि शक्ति के पीछे पागल हो गया। यही माया का
जाल है। विचार शक्ति से दूसरे ठीक हो सकते हैं। यह भी मैं जानता
हूं। लोग मुझसे प्रसाद ले जाते हैं और ठीक हो जाते हैं। यह होता
तो उनका अपना विश्वास है और उसका Credit मुझे मिलता
है। मैं ठीक नहीं करता। तुम्हारा विश्वास ठीक करता है।
कई आदमी गंगा जाते हैं। उनका विश्वास होता है वे वहां ठीक हो
जाते हैं। उनका विश्बास ठीक करता है। गंगा नहीं करती। आपको

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

गुरु बताता हूं कि साधन करो मगर अपनी नीयत को साफ रखो। विचार की धार और Radiation काम करती है। उसका प्रभा दूसरों पर पड़ता है जैसे योरी गैलर के विचार की धार से लोह मुड़ जाता है। कई महा पुरुष दूसरों का भला तो करते हैं मगर मन के चक्कर में आकर अहंकार में आ जाते हैं फिर वे ऊपर नहं आ सकते। स्वामी प्रयाग लाल ने चार कोढ़ी ठीक कर दिये औ अहंकार आ गया। उन चारों के नाम लिखकर उसने मुझे भेज दिये और लिखा कि "मनुष्य बनो" में छपवा दीजिये। मैंने करा दिया उसकी सब शक्ति जाती रही और मन की दशा बिगड़ गई औ बेचैनी आ गई। इसलिए जो महात्मा सिद्धि शक्ति के कारण अहंकार में आ जाते हैं, उनका जीवन का परिणाम बिगड़ जाता है। सपेरा सांप से ही मरता है।

आप लोग आ जाते हैं। मैं तो अपना कर्म भोगता हूं। जबसे मुझे मन की असलियत का पता लगा तबसे मैं अपने आदि घर आने के लिये विवश हो गया। पता लग गया कि यह मेरा देश नहीं है। मगर आप लोगों को इसकी आवश्यकता नहीं है और साधु भी सिद्धि शक्ति में आ जाते हैं मगर मैं नहीं आया। इसलिये आप लोगों से कहना चाहता हूं कि अपने विचार को ठीक रखो। तुम्हारे विचार का प्रभाव तुम्हारे घरेलू जीवन, राष्ट्रीय जीवन और सांसारिक जीवन पर पड़ता है। इस वास्ते सनातन धर्म कहता है कि "शिव संकल्प मस्तु," अपने विचार को ठीक रखो और मन बचन कर्म से शुद्ध हो। यदि एक महिला अभ्यास करती है और अभ्यास के बाद अपने बच्चों को बुरा भला कहती है और उनको कोसती है तो उसके विचार की धार उन बच्चों को हानि कर जायेगी। सत्संग की इसी लिए महिमा है कि सत्संग से सच्ची समझ और जीने का भेद मिलता है। हम अपनी गलतियों और अपने अज्ञान के कारण अपनी हानि कर लेते हैं। घरों में एक दूसरे से लड़ाई झगड़ा है, घृणा है और

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

तुता है। इन हालातों का और वातावरण का प्रभाव घर में सब र पड़ता है। यदि बीबी से तुम्हारी अनवन (बिगाड़) है तो घर में पत्ति अवश्य आयेगी। कोई रोक नहीं सकता। यह विपत्ति चाहे मारी की शकल में आये, चाहे मुकदमा की शकल में आये, चाहे ौत की शकल में आये मगर आयेगी अवश्य। मेरी स्त्री में मेर तेर हुत थी। किसी ने कोई बात कह दी वह कुढ़ती रहती थी। मैं उसे हा करता था कि अपनी आदत को बदलो अन्यथा दुख उठाओगी। छली आयु में वह ६½ साल बीमार रही। इसलिये गुरु आज्ञा वश ने शिक्षा को बदला है और संसारी प्राणियों को यह कहना चाहता कि अपने मन को साफ रखों और अपने वश में रखो। अपने घरों शान्ति रखो और किसी से धोखा और हेराफेरी मत करो ाकि तुम्हारा जीवन सुख शान्ति से व्यतीत हो। यह है जीने का द। सुनो या न सुनो। तुम्हारी इच्छा है। मैं तो काल और कर्म ा मारा हुआ हूं और अपना कर्म भोगता हूं। मन्दिर बना बैठा और ब बुढ़ापे में इतनी सरदी में मदिर के लिए बाहर घूमता हूं। बात बलकुल सच्ची कह रहा हूं। गुरु केवल ज्ञान, भेद और सच्ची समझ ता है, अमल तुमने स्वयं करना है।

मेरे एक मित्र के घर में सास और बहू की हर समय लड़ाई रहती थी। मैंने भी कई बार समझाया, मगर किसी ने अमल नहीं कया। आखिर उस लड़ाई का क्या परिणाम निकला? एक ही ोता था वह मर गया। मेरी साली और उसकी सास का हर समय गगड़ा रहता था। बहुत समझाया मगर कोई प्रभाव न हुआ। आखिर क्या परिणाम हुआ? डाका पड़ा डाकू और सब कुछ ले गये। ति दमे का रोगी हो गया। पाँच साल बहुत दुख उठा के मरा और ह स्वयं T. B. से मरी और मुझे उसका इलाज कराना पड़ा। मेरे अपने घर में मेरी स्त्री झगड़ा करती रहती थी। मैं उससे कहा करता था कि इस लड़ाई झगड़े का परिणाम अच्छा नहीं होगा। आखिर

परिणाम यह निकला कि एक लड़का मर गया। मैं पहले कहा करत था कि स्त्री को पति के मरने और बेटे के मरने का सबसे बड़ा दुः होता है। इसलिये घरों में शान्ति से रहो और प्रेम से रहो। नीयत साफ रखो और दूसरे का माल हड़प मत करो और यदि इससे प जाना चाहते हो तो इसके लिए सन्तों का मार्ग है। मन का चक्कर साधुओं का है। सन्त मन से ऊँचे रहते हैं। मैं मन से ऊँचा नहीं ज सकता था। यह तो हजूर दाता दयाल जी महाराज की दया ह गई। उन्होंने मुझे काम दिया और तुम्हारे अनुभवों के कारण बात मेरी समझ में आ गई और मेरा काम बन गया। मैं मालिक के मिलना चाहता था। अब तुम लोग आये हो। क्या मालिक के मिलने के लिये आये हो ? तुमको तो धन धान्य और मान प्रतिष्ठा चाहिए। किसी को कोई दुख है, किसी को कोई बीमारी है, किसी का मुकदमा है किसी के पुत्र नहीं है। यह तो तुम्हारे कर्म, नीयत और विश्वास से मिलेंगे। तुम समझते हो कि गुरु तुमको देगा। नहीं। गुरु तुमको विधि बतायेगा, सच्चा भेद बतायेगा। तुमको सीधे मार्ग पर लायेगा। इसके अतिरिक्त यदि कुछ और तुम गुरु से आशा करते हो तो तुम भूल में हो। कोई महात्मा पब्लिक को सचाई नहीं बताता। सब अपने डेरे में बांधने का यत्न करते हैं और अपने जाल में फंसाने का यत्न करते हैं। हमारे कल्याण के लिए कोई हमको कुछ नहीं बताता। (एक सत्संगी की ओर संकेत करके फरमाया) समझते हो ! तुम्हारा स्त्री के साथ झगड़ा रहता है। इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। लाख तुम मुझे पैसे दो, दूध और मिठाई लाते रहो। तुम्हारी स्त्री भी सुन रही होगी—

कर्म जो जो करेगा तू अन्त में भोगना पड़ना।

हुजूर दाता दयाल जी महाराज का एक शब्द सुनो, वह लिखते :—

।। मनुष्य बनो ।।

ऐ मेरे प्यारे भाई, देखो संभल के चलना ।
खोटे न कर्म करना, खोटी न बात कहना ।।
दुख दोगे दुख मिलेगा, सुख दोगे सुख मिलेगा ।
मारोगे तुम किसी को, फिर गम पड़ेगा सहना ।।
काल और ख्याल करतब, दरिया से हैं मुशाबा ।
तुम देखना न इनकी, लहरों में पड़के बहना ।।

इससे सिद्ध होगया कि जो कुछ हम बोलते हैं, करते हैं या सोचते हैं उसके प्रभाव से हम बच नहीं सकते । मगर यहां आकर मैं फेल होगया कि मन को वश में रखना अपने वश में है या नहीं । जब मैं यह सोचता हूं कि यह अपने वश में नहीं, यह प्रालब्ध कर्मों के कारण है या इस जन्म के कर्मों के कारण है तो इस परिणाम पर आता हूं कि ऐसा होना ही था । सन्त कहते हैं कि यह काल की रचना है और इसमें सदा दुख और सुख हैं और वे जीवों को मन के चक्कर से निकलने का उपाय बताते हैं । मैं अपनी ओर देखता हूं कि मैं ८६ साल का होगया । मेरे दिल में अब तक भी कभी २ ऐसा विचार आजाता है जिसको मैं नहीं चाहता मगर वह आता है । मैं उसको ज्ञान की दृष्टि से काटता हुँ और यह कह कर अपने दिल को तसल्ली देता हूं कि यह प्रारब्ध कर्मों का फल है और यदि कर्म को आप नहीं मानते तो फिर यह मानना पड़ेगा कि इस संसार को बनाने वाला जालिम है । सन्त उसको निर्दयी, जालिम और काल कहते हैं । तुम लोग यदि काल निर्दयी से बचना चाहते हो तो इससे ऊपर चले जाओ । इसकी सीमा से ऊपर चले जाओ । यहाँ काल का चक्कर है । यहाँ तो लाभ भी होगा और हानि भी होगी, दुख भी होगा और सुख भी होगा । मगर यहां की हर वस्तु में परिवर्तन आ जाता है ।

Creator या कर्ता पुरुष कौन है ? तुम्हारा संकल्प । तुम्हारा मन काल का अंश है । सन्त कहते हैं कि यदि सदा के लिए बचना

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

चाहते हो तो अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को पकड़ो अन्तर में बाबे फकीर का या किसी और गुरू का या राम या कृष्ण रूप आता है। वह तो तुम्हारे ही मन का रूप है। बाहर से न रा न कृष्ण. न बाबा फकीर और न कोई और गुरु आता है। जि प्रकार का संस्कार किसी के मस्तिष्क पर होता है वही शकल बन कर सामने आता है। इस अज्ञान के कारण संसार में धर्म पंथ अ गद्दियाँ बन गईं और आपस में झगड़े आरम्भ होगये। देश की ब के समय. कितने सिर कट गये। क्यों ? किसी ने राम को या कृ को मालिक माना, किसी ने हजरत मुहम्मद को मालिक माना अ किसी ने गुरू नानक को मालिक माना। अरे ये तो सब तुम्ह अपने ही मन के माने हुए रूप हैं। क्योंकि मेरे जिम्मे यह कर्त

—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही ॥

मैं सोचता हूं कि हुजूर दाता दयालजी महाराज ने मुझे य काम क्यों दिया। क्या मैं जगत का कल्याण कर सकता हूं ? संसार को भेद बता सकता हूं कि ऐ मानव ! तू अपने भ्रम औ अज्ञान के कारण बट गया। कोई हिन्दू बन गया, कोई मुसलमा बन गया, कोई सिख और कोई ईसाई बन गया और तेरे अज्ञान कारण खून की नदियां बह गईं। अरब और इसराइल का झगड़ा कहीं कोई झगड़ा और कहीं कोई झगड़ा। धर्म जहाँ बरकत की वस्त थी वहां उसको झगड़े की वस्तु बना दिया गया। धर्म तो वह है जिस आदमी को शान्ति मिले। सन्तों ने जब देखा कि लोग धर्म और ईश्व के नाम पर लड़ाई झगड़े कर रहे हैं तो उन्होंने यह ज्ञान दिया कि भई ! संसार को पैदा करने वाला तो नूर है, प्रकाश है सावित्री है वह एक है। तुम अपने अज्ञान के कारण बट गये। मगर जब त हम यहाँ हैं दुख और सुख का प्रभाव हम पर अवश्य पड़ेगा। ह

शिव संकल्प मस्तु के उसूल पर चलने से किसी सीमा त
अज्ञान से बच सकते हो। यह काल का जंजाल बहुत बड़ा है। कहां
तक बचोगे ? हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने काल के बारे में मेरे
नाम एक शब्द लिखा था —

काल चक्र का सहज हिंडोला, झूला अचरज न्यारा।
सब कोई झूले झूला चढ़ कर, काल झुलावन हारा ॥
चन्द्र सूर दोऊ गगन में झूलें, झूलें नौ लख तारे।
जीव जन्तु पृथ्वी में झूलें, नर पशु सकल विचारे ॥
राजा झूला रानी झूली, और प्रजा समुदाई।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर झूले, झूली सब दुनियाई ॥
लक्ष्मी झूली दुर्गा झूली, गायत्री महारानी।
देवा झूले देवी झूले, जल थल अग्नी पानी ॥
काल भी झूला अपने झूला, सृष्टि प्रलय कर प्यारे।

काल क्या है ? उदाहरण से समझो। हमारी बैटरी में E.M.E.
है। उसमें से करैन्ट निकलती है। उससे पंखे चलते हैं, बल्ब जलते
हैं ओर मोटरें चलती हैं। फिर वह करैन्ट वापिस वहाँ ही चली
जाती है, जहां से आई थी। ऐसे ही हमारा जीवन है। हम अलख
अगम से निकल कर यहां आये हैं। जब तक जीवन है तब तक
गति रहेगी। सब से पहले जो वस्तु गति में आई वह काल है
यहाँ एक काल नहीं है। जैसे एक बैटरी में से कई सरकट निकलते
ऐसे ही उस मालिक की रचना में पता नहीं कितने विष्णु कितने
ब्रह्मा और कितने शिव है, कितने लोक लोकान्तर और कितने
आकाश और पाताल हैं। कोई अन्त नहीं पा सकता। एक किरण
जिसने यह संसार बनाया है जब वह वापिस चली जाती है तो उस
समय प्रलय हो जाती है —

जो उपजे सो बिनसे

संसार बेअन्त है। अनुभव इसको जानता है। अनुभव में आक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मस्त हो जाता हूं। हुजूर दाता दयाल जी महाराज फरमा... है। जो वस्तु गति में है वह भूलती है। हम अड़ोल अवस्था से आ हैं :—

चढ़ी पेंग तब ऊँचे आये, उतरी नीचे ठहरे।
कभी मिले तो जमघट देखी, बिछुड़ के होगये न्यारे॥
एक दशा में नित जो बरते, कोई नजर न आया।
पीर पैगम्बर कुतुब औलिया, ऋषि मुनि बचन न पाया॥
पानी भया भाप की सूरत, धाया गिरि कैलासा।
बरफ बना धारा वह निकली, नीचे किया निवासा॥
नीचे भी रहने नहीं पाया, फिर ऊँचे की आशा।
हम तो देखें खुली दृष्टि से, अचरज अजब तमाशा॥
लकड़ी जल कर कोयला हो गई, कोयला राख और माटी।
माटी माटी में नहीं ठहरी, बनी काठ और लाठी॥
विष्टा अन्न अन्न भया विष्टा, सोई सब कोई खावे।
यह प्रपंच हैअद्भुत न्यारा, कोई विरला लख पावे॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती लीला, कभी ऐसी कभी तैसी।
यह सब काल बली की माया, कभी जैसी कभी तैसी॥
पंडित कभी अनाड़ी होते, कभी अज्ञानी ज्ञानी।
कभी जड़ मिलजुल चेतन ठहरे, कभी चेतन जड़ जानी॥
समझत बने कथन नहीं आवे, मन बानी अलसानी।
कैसे कोई समझावे किसको, समझे कोई गुरु ज्ञानी॥
एक दशा में कोई न बरते, कभी बैठा कभी दौड़ा।
कभी थका कभी सोया लेटा, काल चक्र अति चौड़ा॥
भूले की है विचित्र कहानी, कथा वारता न्यारी।
नर को हम समझावन आये, सुने न बात हमारी॥
दुख सुख दुख सुख द्वन्द्व पसारा, द्वन्द से प्यार बढ़ाया।
द्वन्द भाव ले जगत रचाया, द्वन्द के फाँस फँसाया॥

मन बुद्धि और चित हंकारा, सो झूले की रसरी।
दो लड़ त्रयलड़ चौलड़ बन आई, जीव निबल को जकड़ी ॥
जकड़े माया के फंदे में, रोये और चिल्लाये।
शोर मचाये बहु चिल्लाये, छूटन विधि नहीं पाये ॥

मैं जब हजूर दाता दयाल जी महाराज के पास जाता तो बहुत रोता और जब वापिस आता तो बहुत रोता। हर समय मेरा रोना ही रोना था।

तब दयाल को दाया लागी, सन्त रूप धर आया।
राधास्वामी अचल मुकामी, शालिग्राम कहाया ॥
नर शरीर में प्रगटा आकर, जीवन बहुत चिताया।
जो कोई जीव शरन में आया, अपनाकर अपनाया ॥

मेरे पास लोग आते हैं। किसी के लड़का नहीं है। किसी का लड़का बीमार है। किसी का कारोबार नहीं हैं। किसी को कोई दुख है और किसी को कोई कष्ट है। क्योंकि उनका विश्वास होता है, इसलिये उनके काम हो जाते हैं। लेकिन जो कुछ मैं देना चाहता हूं, उसको लेने के लिए कोई त्यार नहीं। तुमको जो कुछ मिलता है वह तुम्हारे ही कर्म, श्रद्धा, नीयत और विश्वास से मिलता है। लोग मुझसे प्रसाद ले जाते हैं और उनके बच्चे हो जाते हैं। लेकिन मेरी लड़की के कोई बच्चा नहीं है। बाईस साल उसके विवाह को हो गये। मैंने कई बार प्रसाद दिया है। यह सब विश्वास का खेल है। लेकिन काल का चक्कर है और लोग इससे निकलना नहीं चाहते। मैं निकलना चाहता था। इसलिये हजूर दाता दयाल जी महाराज फरमाते हैं :—

सुन फकीर यह गुरु उपदेशा, मैं भी तुझे सुनाऊँ।
बात जो मेरी मन से माने, इस झूले से बचाऊँ।
खेल खेलाऊँ सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊँ।
काल हिंडोले से तू बाचे, विधि विचित्र समझाऊँ ॥

काल हिंडोले से निकलने के लिये उन्होंने मुझे यह काम दिया था। मेरा द्वैत भाव नहीं जाता था। मैं तो हजूर दाता दयाल जी महाराज के सुन्दर मुखड़े से बंधा हुआ था। जब तक कोई आदमी वाहे फकीर, राम, कृष्ण या किसी और गुरु के मुखड़े से जुड़ा हुआ है, वह काल के चक्कर में है। इससे उसमें सिद्धि शक्ति भी आ जायेगी, लड़के भी हो जायेंगे, लड़कियें भी हो जायेंगी और संसार के और काम भी होते रहेंगे, मगर काल के चक्कर से निकल नहीं सकोगे। मुझे इस बात की समझ नहीं आती थी। इसलिये उन्होंने मुझे आज्ञा दी थी कि फकीर ! तुमको काम देता हूं। नाम दान दिया करो और सत्संग कराया करो। तुमको सच्चे सत्गुरु राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे और अब हो गये। अब मुझे विश्वास हो गया और तुम्हारे अनुभवों के कारण विश्वास पक्का हो गया। इसलिये अब मैं अपनी सुरत को प्रकाश और शब्द में ले जाने का यत्न करता रहता हूं। हजूर महाराज ने लिखा है कि सत्गुरु शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल है और उनके चरण प्रकाश हैं। मगर जो वहाँ तक जा नहीं सकते उनके लिये सुमिरन और ध्यान है और प्रकाश और शब्द आगे जाने के लिए है।

कर सत्संग विवेक से गुरु का, गुरु दयाल हितकारी।
साधु बनकर साध ले युक्ति, जा झूले के पारी ॥

वह फरमाते हैं कि समझ बूझ के साथ सत्संग कर। पिछले जमाने में सैन बैन से काम लिया जाता था। इसलिये उस सैन बैन को साधारण लोग नहीं समझ सकते थे। मैंने इशारे छोड़ दिये और स्पष्ट वर्णन कर दिया। इससे हानि यह है कि पैसा नहीं आता और गुरे नहीं बनते। मैं यदि परदा रखता तो अज्ञान में आकर तुम लोग मुझे धन देते। अब कौन देता है। मैं क्योंकि समय का सन्त सत्गुरु हूं इसलिये मेरा यह कर्तव्य है और हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा भी है, इसलिए मैंने शिक्षा को बदल दिया है।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज सत्संगों में फरमाया क... कि तुम लोग मेरी बात को नहीं सुनते। कोई डन्डेमार आयेगा फिर तुम मानोगे। मैं हूं वह डन्डेमार। जिनके भाग्य में है वे मेरे डन्डे सहें, मेरी बात को समझें और अपना जन्म बनायें।

नर शरीर सुर दुर्लभ पाया, सतसंगत में आया।
तेरा दांव पड़ा है पूरा, सोच समझ तज माया ।।

वह कहते हैं कि सोच समझ के माया को तज। मुझसे तजी नहीं जाती थी। यह समझ मुझे तुम लोगों से मिली। इसलिये तुम लोगों को मत्था टेकता हूं और अपना सत्गुरु मानता हूं। मैं अभी भीलवाड़ा गया। वहां श्री कृषक जी को दोनों समय मत्था टेकता था और आते समय उनको पाँच सौ रुपया देकर आया हूँ कि अपनी आँखों का मोतिये का आपरेशन करा लो।

तेरा भेद न जाने हाय, जगत धोखे में रहा।

वह भेद क्या है ? कोई राम को ईश्वर समझता है, कोई कृष्ण को ईश्वर समझता है, कोई प्रकाश को ईश्वर समझता में, कोई बाबे फकीर को और कोई किसी और गुरु को ईश्वर समझता है। असल में यह ईश्वर नहीं।

बिन बानी का शब्द है, बिना अक्षर का ग्रन्थ।
बिन मन बुद्धि विवेक है, बिना डगर का पन्थ ।।
कोई कैसे आवे जाय, भरम की धार बहा।

बाणी के बिना शब्द है और मन और बुद्धि के बिना विवेक है कौन समझेगा ? मेरी सुरत जब प्रकाश और शब्द में जाती है तो वहाँ मन तो होता नहीं और न ही वहाँ बुद्धी होती है। वहाँ तो केवल Feelings of Existence होती है। यह है मन और बुद्धि के बिन विवेक होना। दया तो हजूर दाता दयाल जी महाराज की है मगर वहाँ तक पहुंचाने वाले तुम लोग हो। दयाल दास आदि को मैंने नाम दान देने की आज्ञा इसलिये दी है कि यदि इनकी आगे जाने की

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

इच्छा हो तो इनको समझ आ जाये। कमालपुर वाली माई क अन्त: मेरा रूप प्रकट हुआ। उसने मुझे बताया। मैंने उसको कहा कि तुम स्त्रियों को नामदान दिया करो। उसने काम शुरू कर दिया। जब उसका रूप स्त्रियों के अन्तर प्रकट होने लगा तब उसको समझ आई। अब यदि ये लोग दूसरों को लूटेंगे तो स्वयं फँस जायेंगे। वह जो अवस्था है जहाँ मन नहीं हैं वहाँ जाना बहुत कठिन है।

सत्त तत्व के सिखर पर, द्वैत अद्वैत न कोय।
मन चिउँटा फिसला गिरा, बुद्धि माखी रही सोय।
चित्त पक्षी न उड़ाय, बहु दुख कष्ट सहा॥

जब सुरत आगे चली जाती है तो वहाँ न गुरु है न चेला है, न मन है न चित है, न बुद्धि है और न हंकार है। वह हमारी अपनी ही आदि अवस्था है। जैसे E. M. F अपने आप में कायम हैं ऐसे ही हमारी दशा है। वह मालिक अपनी ज़ात में आप कायम है। जो वहाँ जाना चाहता है उसके लिये यह मार्ग है। पिण्ड अण्ड ब्रह्माण्ड से परे जाओ। जो इनसे परे जायेगा, उसके लिए आवागवन नहीं है।

बिन बादल पानी बरस, बिना बून्द का गेह।
भीजे तन मन सहज में, नगर ग्राम और गेह॥
चहुँ ओर बरसाय घटा, छाई है महा॥

जिसकी सुरत वहाँ ठहर जाती है उसको शान्ति मिल जाती है। ...से बाहर में सारा दिन काम करने से थकावट हो जाती है और ...र बहुत गहरी नींद आने से सुख मिलता है ऐसे ही जिसकी सुरत ...हाँ आदि अवस्था में पहुँच जाती है उसको शान्ति मिल जाती है ...र शान्ति ही लक्षपद है। वह आदि अवस्था क्या है? जानता हूं, ...भी वहाँ रहता भी हूं मगर वहाँ ठहरा नहीं जाता। क्यों? पता ...हीं। "नथ खसम दे हथ। उस मालिक में हम पहले इस प्रकार थे ...से दूध में मक्खन। उस समय मक्खन की अपनी हस्ती नहीं होती। ...ब यह सुरत वापिस अपने घर चली जायेगी तो इसकी हस्ती समाप्त

हो जायेगी केवल एक तत्व या एक ज़ात बाकी रह जायेगी। एक शरीर की नींद है। एक मन की नींद है। वह है निर्विकल्प समाधि। शब्द को सुनना रूह की नींद है। सुरत की नींद है अनामीधाम। अपनी जात में गुम हो जाना यही हमारा आदि है और यही हमारा अन्त है। वहाँ न मैं और न तू, न गुरु न चेला। ये चार अवस्थायें हैं। मैंने नींद कह दिया और सन्तों ने सुन्न कह दिया—

तीन सुन्न के पारा, वह है देश हमारा,
गहरी समाधी में तुम सब कुछ भूल जाते हो।
मन अलसाना अमन बन, बुद्धि बनी अबुद्ध।
चित अचेत चेते नहीं, कैसे पावे सुद्ध ॥
नहीं सूझे जतन उपाय, किसने मर्म लहा ॥

अभ्यास करते हुए मन अमन हो जाता है, चित अचित हो जाता है और बुद्धि अबुद्धि हो जाती है। वह अवस्था अपने आदि घर की है। गुरु नानक साहिब ने उस अवस्था को उनमुन अवस्था कहा है केवल शब्दों का फेर है। किसी को यह मरम नहीं मिलता। यह मरम केवल बाहर का गुरु देता है—

"नेति नेति" कोई कहे, 'एति एति' कहे कोय।
'नेति एति' कोई नहीं, चतुराई गई खोय।
जब सतगुरु भये सहाय, राधास्वामी चरन गहा ॥

जब तुम गहरी नींद में चले जाते हो तो उस समय कुछ याद नहीं होता। ऐसे ही जब जाग्रत में आदमी उस अवस्था में पहुंच जाता है तो नेति एति कैसी ? कबीर साहिब और राधास्वामी दयाल ने उस अवस्था को अनामी धाम कहा है। मैं अहंकार नहीं करता। सतगुर नाम है सच्चे ज्ञान और सच्चे भेद का और मैं वह ज्ञान और भेद देता रहता हूं। गंगा बह रही है। नहा लो। यदि नहा नहीं सकते तो हाथ मुँह ही धो लो। छींटे ही ले लो। या इसके किनारे सैर ही करलो। कम से कम ठन्डी हवा ही लगेगी। मैंने

समझाने में कोई कमी नहीं छोड़ी। मैं अपने आपसे पूछता हूं कि फकीर ! तेरे पास लोग आते हैं तुम इनके लिए क्या कर सकते हो ? मैं शुभ भावना देता हूं। सच्चे दिल से चाहता हूं कि जिस नीयत से मेरे पास कोई आता है, उसकी मनोकामना पूरी हो। इसके सिवा मैं और कुछ नहीं कर सकता। दूसरे महापुरुष शायद कर सकते हों तो मुझे पता नहीं। बाकी जो आदमी मुझ पर विश्वास करते हैं उनके काम बन जाते हैं। विश्वास करना तुम्हारा काम हैं। मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है। प्रकृति का अन्त किसी को नहीं मिलता। बात जिसको समझ में आगई वह तर गया। लोग आते हैं। मैं चाहता हूं कि दाता इनकी मनोकामनायें पूरी करें। यही कुछ मैं कर सकता हूं। दूसरे जो कुछ मैंने समझा वह बता दिया।

अनमोल विचार

प्रर्थना--(शरणागति)

मैं तुम से क्या मांगूं। तुम्हारे पास है क्या ? तुम सब देदिला कर खाली हाथ दिखलाई देते हो। कहते हैं तुम सब कुछ हो और कुछ भी नहीं। तुम मन और बुद्धि की पहुँच से बहुत दूर हो। फिर मैं मांगूं भी तो कैसे मांगूं ? और क्या मांगूँ ? मुक्त और स्वतन्त्र से उसकी मुक्ति और स्वतन्त्रता मांगना अच्छा नहीं। धनवान से उसके धन के लेने की इच्छा रखना व्यर्थ ही है। इसके सिवा जब मैं विचार करता हूं तुम में धन, द्रव्य, बल और शक्ति कुछ भी नहीं पाता। तुमने लक्ष्मी विष्णु को दे दी। लक्ष्मी विष्णु की अर्द्धांगिनी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

। मैं कैसे कहूं कि तुम मुझको लक्ष्मी दो। मैं विष्णु के साथ युद्ध रना नहीं चाहता। तुमने शक्ति और बल शिव भगबान को दें या है। शक्ति इनकी स्त्री है। मैं कैसे कहूं कि मुझको शक्ति दो! ह बहुत बड़ी ढिठाई और असभ्यता होगी। मैं कैसे कहूं कि तुम झको विद्या और बुद्धि दो! विद्या और बुद्धि का नाम गायत्री ार सावित्री है। यह ब्रह्मा की स्त्रियाँ हैं। ब्रह्मा यों ही चार मुँह आठों आंखों से चारों ओर देखते रहते हैं। उनको क्रोध दिलाना खेता है और फिर वह बड़े बूढ़े भी ठहरे। इसका भी तो ध्यान खना ही पड़ता है। मैंने बहुत अच्छी तरह सोच लिया तुम सब छ औरों को दे दिलाकर आप सब से अलग थलग हो गये हो। म्हारे पास कुछ नहीं है इसलिये तुम से मांगना भी अनसमझी की ात है। ढिठाई और अपराध क्षमा करो। मैं कूछ नहीं मांगता और मांगने के अभिप्राय से तुम्हारे पास आया हूं। हां यदि तुम यह मझते हो कि मेरे पास कुछ है तो वह ले लो। यह सब तुम पर यौछावर है। मैं स्वयं तुम पर न्यौछावर होता हूं। मेरी निर्धनता, मेरी बेवसी, मेरी मूर्खता और दीनता यदि तुम्हारी दृष्टि में कुछ भी मूल्य रखती है तो इन्हें मैं प्रसन्नता से तुम्हारे पवित्र चरणों में अर्पण करता हूं। इनको स्वीकार करो। मेरे मन के भावों को, पुरुषार्थ और उत्साह को, मेरे देखने, सुनने, बोलने और समझने बूझने की शक्तियों को और इनके सिवा और भी जो कुछ है वह लेकर अपना बना लो,। मुझको इनकी आवश्यकता नहीं है। यदि यह तुम्हारे अर्पण और समर्पण हो जायें तो मैं अपने आपको बड़ा ही भाग्यवान समझूँगा। धन द्रव्य, बल, शक्ति, विद्या बुद्धि यह सब मेरे पास नहीं हैं परन्तु यदि इनके लिये कुछ भी इच्छा मन में हो तो वह भी तुम ही ले लो। मुझको इनकी भी आवश्यकता नहीं हैं।

लोग कहते हैं तुम सत् हो, चित् हो, आनन्द हो, शुद्ध हो, मुक्त हो, बुद्ध हो; इन सारे गुणों को भी अपने पास रक्खो। शुद्धता

मुक्तपना, बुद्धपना, इनमें से भी मुझको किसी की इच्छा नहीं जो तुम्हारा है वह तुम्हारे ही पास रहे और यदि मैं भी तुम्हारा हूं तो फिर तुम जानते ही हो कि जो जिसका है वह उससे दूर न रह सकता है। इसलिए मैं नहीं समझता कि तुमसे मांगूँ भी तो क्या मांगूँ ? परन्तु न मांगना भी ढिठाई और अनुचित है। इन सब बातों को विचार कर मैं तुम से मांगता हूं—

भिक्षा

हम आये ! आये !! आये!!!

आज तुम्हारे द्वार पर प्रभु भिक्षा मांगन आये। (टेक)

१—क्या मांगूँ कुछ थिर न रहाई, सुत दारा धन अगमा पाई
इनसे रहूं नित चित्त हटाई, मांगत मन अति रहत लजाई
यह हृदय नहिं भाये ॥१॥

२—रूप अनूप तुम्हारा देखा, मिट गया काल कर्म का लेखा,
सब का सब विधि किया परेखा, प्रेम प्रीति का वही विसेखा
नयनों जल भर लाये ॥२॥

३—मांगन गये सो लौटे नाहीं, भर्म रहे माया परछाईं
मन में पड़ गई काल की झांई, बिनती सुनो हमारे साईं
हम तो रहे सकुचाये ॥३॥

५—अिच्छा थकित थकित मन काया, दर्शन पाप जिया ललचाया
पद सरोज की दीजे छाया, व्यापे काम क्रोध नहीं माया
निस दिन रहे लौलाये ॥७॥

५—हित चित से रहूं आज्ञाकारी, नख सिख उर में बसो हमारी
तुम हो दीनबन्धु हितकारी, राधास्वामी चरन शरन बलिहारी
लो अब अंग लगाये ॥५॥

———

परम सन्त परम दयाल जी महाराज का
अलीगढ़ में सत्संग

महाराज जी ता० ३ मार्च को रात्रि के पौने तीन बजे पधारे और वे ४. ५ को रह कर ता० ६ को विदा होगये। ता० ३ को ही हर के सत्संगियों की भीड़ लग गई थी। दूर दूर से लोग आये थे। ता० ४ व ५ को दोनों समय सत्संग हुआ। ता० ४ की शाम स्वामी त्रिलोकीनाथ जी देवत्रय होम्यो पैथिक अस्पताल के मंत्रण पर महाराज जी ने सत्सग कराया। स्वामी त्रिलोकीनाथ ने महाराजजी का बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया। ता० ५ को रंगाबाद में श्री हरिओउम् पाठक के निवास स्थान पर महाराज ने सत्संग कराया और प्रातःकाल दोनों दिन मेरे मकान पर त्संग हुआ। सत्संगों में आनन्द की वर्षा होती रही। प्रातःकाल लेकर रात्रि के ९ बजे तक दिन भर लोगों की भीड़ लगी रहती और हर समय सत्सँग चलता रहता था। महाराज जी ने अपने वचनों में व्यवहार, कर्म, भक्ति आत्मज्ञान के विषयों पर बहुत छ प्रकाश डाला मगर मैं यहां पर व्यावहारिक जगत की बातों को ोप रूप में देना आवश्यक समझता हूं ताकि जन साधारण अपने चार और कर्मो का सुधार कर सुख और शान्ति प्राप्त कर कें।

सब से विशेष बात जिसको महाराज जी ने बड़े स्पष्ट रूप से मझाया वह यह थी कि मानव अपने विचार और कर्म को ठीक रे। संसार में कर्म की मुख्यता है। जब तक जीवन है प्रत्येक यक्ति को कर्म करना पड़ता है। बिना कर्म किये कोई रह नहीं कता और उस कर्म का फल उसे मिलता रहता है चाहे कोई उस ोर ध्यान दे या न दे मगर कर्म के फल से कोई नहीं बच सकता ाहे कोई सन्त हो, महात्मा हो, भक्त हो या कोई और हो। महा-

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

राज जी ने इस पर कई उदाहरण भी दिये कि तुल
राम के परमभक्त रामायण के रचियता को अन्तिम जीवन में
कष्ट हुआ। अर्जुन श्री कृष्ण भगवान के मुख से गीता सुनने व
नर्क की यातना से न न बच सका। स्वामी रामकृष्ण परम
काली माई के परम भक्त भी कष्ट से न बच सके। बाबा सावर्ना
जी महाराज को भी अन्तिम समय में बड़ा दुख सहन करना पड़
यह संसार कर्म क्षेत्र है। यहां कर्म का फल मिलना अनिवार्य
इसलिये ऐ मानव ! तू खोटे काम न कर। ४२० हेरा फेरी कर
छोड़ दे। अपने स्वार्थ के लिये दूसरों को न सता न उनके स
धोखा फरेब कर आदि आदि। कर्म का सम्बन्ध विचार से है। इ
लिये अपने विचारों को शुद्ध कर। कल्याणकारी विचार रख। कि
से ईर्ष्या द्वेष न कर। जो कुछ कर चुका, वह कर चुका मगर अ
के लिये अपने कर्म को बनाले ताकि तेरा भावी जीवन सुख से व
सके। कर्म और विचार के शुद्ध होने पर ही तू आत्मज्ञान का अधि
कारी हो सकता है। आत्म अनुभव करने के लिये विचारों के बि
शुद्ध किये यदि तू ने साधन अभ्यास भी किया तो वह हानिकर होगा
आत्म अनुभव तो दूर रहा। प्राचीनकाल में आत्मज्ञान की शिक्ष
केवल अधिकारी जीवों को ही दी जाती थी। ऋषि लोग आत्मज्ञा
के जिज्ञासुओं से पहिले बहुत समय तक सेवा का काम लेते थे ताकि
उसकी मनोवृति दूसरी ओर से हट कर एक ओर लग जाय औ
उसके विचार निर्मल हो जांय। तब उसकी परीक्षा करते थे मग
आज कल के गुरु तो अधिकार संस्कार की छानबीन किये बिना ह
नाम दान दे रहे हैं ताकि चेलों की संख्या बढ़ जाय और भेट चढ़ाव
आने लगे। मैंने इस रहस्य को समझा है और सन १९४२ के बा
मैंने किसी को नाम दान नहीं दिया। चार सत्संगों में तो बहुत कुछ
कहा गया मगर मैंने केवल एक ही विषय पर थोड़ा सा लिख दिया
है। 'मनुष्य बनो' में महाराज जी के प्रवचन हर महीने प्रकाशित
होते रहते हैं, उनको पढ़िये।

अनमोल वचन

(१) जो तुम्हारी बातों पर श्रद्धा न करे उसे किसी प्रकार का उपदेश न करो। हाँ उस पर कोई आफत आ पड़े तो अच्छी सलाह देने से न चूको।

(२) जो तुम्हारे सामने दूसरों की निन्दा करता है, उससे सावधान रहो क्योंकि वह दूसरों के आगे तुम्हारी भी निन्दा कर सकता है।

(३) जिसने अपनी जिह्वा को वश कर लिया, उसने तीनों लोकों को जीत लिया।

(४) पुस्तकें ऐसी ही पढ़नी चाहिये, जिनसे चित्त निर्मल हो, अच्छे कामों में साहस और उत्साह बढ़े, इन्सानियत और ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान पैदा हो, सुमार्ग में रुचि उत्पन्न हो।

(५) ऐसे लोगों से राय नहीं लेना चाहिये जो सभी बातों में हां-हां करते रहते हैं और सभी बातों में शक किया करते हैं।

(६) सब विपत्तियों का मूल कारण लोभ है और शत्रुता की जड़ कठोरता है।

(७) जिस व्यक्ति से विशेष प्रेम हो, उससे बड़ी हो आवश्यकता के बिना ऋण न लो।

(८) दूसरों के अपराध को क्षमा कर दो। यदि तुमसे कोई अपराध हो जाय तो अपने मन को धिक्कारो।

(९) यदि कोई उदार चित महात्मा तुम्हारे किसी काम से नाराज हो जाय तो तुम्हें चाहिये कि मीठे-मीठे बचनों से उन्हें सन्तुष्ट करो।

(१०) मूर्ख और चतुर की भी परीक्षा हो जाती है। जो संसार के गुण ग्रहण कर लेता है, दोष त्याग देता है, वह चतुर है, पर जो केवल दोष ढूंढ़ना है, वह पढ़ा लिखा चाहे जितना हो किन्तु मूर्ख ही है।

(११) जहां जाने से धर्म, नीति और ज्ञान प्राप्त हो वहाँ की गत न्यारी है, नहीं तो बड़े आदमियों के यहाँ बिना बुलाये कभी त जाओ। ऐसा करने से मान घटता है।

(१२) मनुष्य चाहे जैसा प्रतापी, बली, चतुर, बहुदर्शी तथा वद्वान क्यों न हो, पर धर्म के बिना पशु के समान है।

(१३) मारना चाहते हो तो बुरी इच्छाओं को मारो।
जीतना चाहते हो तो तृष्णाओं को जीतो।
पहिनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहिनो।
लेना चाहते हो तो आशीर्वाद लो।
छोड़ना चाहते हो तो पाप और अत्याचार को छोड़ो।
बोलना चाहत हो तो मीठे बचन बोलो।
देखना चाहते हो तो अपने आपको देखो।
सुनना चाहते हो तो ईश्वर की प्रशंसा और दुखियों की पुकार को सुनो।

अपनी इच्छायें जितनी बढ़ाते जाओगे, तुम्हें उतना ही रोना ड़ेगा। जितना कम करते जाओगे, उतने ही प्रसन्न चित्त बनोगे।

यदि तुम अपनी त्रुटियों को छोटा समझ कर उन्हें दूर करने पर यान नहीं दोगे तो हमेशा दुख पाओगे।

हमारे अपने विचार ही भाग्य को बनाने या बिगाड़ने वाले हैं त: इन्हें ठीक रक्खो। यही आनंद है, शान्ति है, सुख और जीवनहै।

(१४) भविष्य की चिन्ता मत करो। तुम अपना वर्तमान ही हीं जानते। वर्तमान को सम्हालो, भविष्य स्वयं ठीक हो जायगा।

(१५) मन की कल्पना और प्रयत्न द्वारा साधा जाय वह ध्यान । दोनों के बिना जो साधा जाय वह समाधि है।

(१६) द्ररिद्र वही है जो विषयासक्त है और धनी वह है जिसे नियां की किसी वस्तु की इच्छा नहीं है। संसार की वस्तुओं को ोड़कर सब कुछ सहने वाला ही महात्मा है।

चेतावनी

(सन्त शब्दावली से)

क सब रैन का सपना। समझ मन कोई नहीं अपना ॥१॥
ठन है मोह की धारा। बहा सब जात संसारा ॥२॥
ा ज्यों नीर का फूटा। पत्र ज्यों डार से टूटा ॥३॥
। नर जात जिंदगानी। अजहुं तो चेत अभिमानी ॥४॥
रख मत भूल तन गोरा। जगत में जीवना थोरा ॥५॥
ो मद लोभ चतुराई। रहो निःसंक जग माहीं ॥६॥
न परिवार सुत दारा। सभी इक रोज है न्यारा ॥७॥
कसि जब प्रान जावेंगे। कोई नहिं काम आवेंगे ॥८॥
दा जिनि जान यह देही। लगा ले नाम से नेही ॥९॥
हत कबीर अबिनासी। लिये जम काल की फांसी ॥१०॥

चेतावनी

चार दिन अपनी नौबत चले बजाय ॥टेक॥

उताने खटिया गड़िले मटिया, संग न कछु ले जाइ ॥१॥
देहरी बैठी मेहरी रोबै, द्वारे लों संग माइ ॥२॥
मरघट लौं सब लोग कुटुम्ब मिलि, हंस अकेला जाइ ॥३॥
वहि सुत वहि बित वहि पुर पाटन, बहुरि न देखै आइ ॥४॥
कहत कबीर भजन बिन बन्दे, जनम अकारथ जाइ ॥५॥

———

महर्षि शिवब्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकें

आध्यात्मिक पुस्तकें

सम्पूर्ण महारामायण	१०)
श्री मद्भगवद्गीता भाग १	१)५०
,, भाग २	१)५०
नानक योग ३ भाग	४)
राधास्वामी योग ६ भाग	८)
कबीर योग प्रथम भाग	२)५०
,, द्वितीय भाग	२)७५
,, तृतीय भाग	१)७५
कबीर आद्य ज्ञान प्रकाश	३)
शरणागति योग	)७५
उपासना योग	१)
कर्म रहस्य	१)
आनन्द योग प्रकाश	२)५०
Light on Anand yog	३)
पंथ संदेश	३)
सहज भक्ति	१)
आत्मिक प्रायमर	१)
दयाल योग (उर्दू)	२)५०

उच्चकोटि के उपन्यास

ाही भूत	१)५०
ाही डाकू	३)७५
ाही लकड़हारा सजिल्द	४)६२
भिखारी	३)५०
ठगरनी	२)५०

आबदार मोती	२
ताबदार मोती	२
झलकदार मोती	
गिरहदार मोती	१
रंगदार मोती	२
दलदार मोती	३
कजदार मोती	३)
चमकदार मोती	२)
हिंसक मोती	२)
ओ३म नाविल	३)
शाही भक्तिनी	२)
शिवजी की अद्भुत कहानी	१)
सिंध देश की कहानियाँ	१)२

पाठ तथा गाने के शब्द

शिव शब्द सागर	
सजिल्द भाग १ व २	७) ७)
फकीर भजनावली	१)५
शब्द गुंजार भाग १, २, ३,	५)
शब्दों का गुटका	)६
नन्दू भाई की साखी	१)५
पिंगल साखी	१)
सन्त कबीर की साखी	३)
कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१)५०
कबीर शब्दावली	२)२५
नैय्यरे आजम	१)५०
रहिमन नीति दोहावली	)७५
सन्त शब्दावली	१)५०

महर्षि शिवब्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकें

आध्यात्मिक पुस्तकें

महारामायण	१०)
्गवद्गीता भाग १	१)५०
,, भाग २	१)५०
योग ३ भाग	४)
ामी योग ६ भाग	८)
ोग प्रथम भाग	२)५०
द्वितीय भाग	२)७५
तृतीय भाग	१)७५
आद्य ज्ञान प्रकाश	३)
ाति योग	)७५
ा योग	१)
्स्य	१)
योग प्रकाश	२)५०
t on Anand yog	३)
्श	३)
ाक्ति	१)
़ प्रायमर	१)
योग (उर्दू)	२)५०

्चकोटि के उपन्यास

भूत	१)५०
डाकू	२)७५
्कड़हारा	३)७५
भिखारी	३)५०
जादूगरनी	२)५०
आबदार मोती	२)[illegible]
ताबदार मोती	२)२५
झलकदार मोती	२)७५
गिरहदार मोती	१)[illegible]५
रंगदार मोती	२)५०
दलदार मोती	३)
कजदार मोती	२)५०
चमकदार मोती	२)२५
हिसक मोती	२)[illegible]०
ओ३म नाविल	३)
शाही भक्तिनी	२)५०
शिवजी की अद्‌भुत कहानी	१)५०
सिंध देश की कहानियाँ	१)[illegible]५

पाठ तथा गाने के शब्द

शिव शब्द सागर	
सजिल्द भाग १ व २	७) ७)
फकीर भजनावली	१)२५
शब्द गुंजार भाग १, २, ३,	५)
शब्दों का गुटका	)६०
नन्दू भाई की साखी	१)५०
पिंगल साखी	१)
सन्त कबीर की साखी	३)
कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१)५०
कबीर शब्दावली	२)२५
नैय्यरे आजम	१)५०
रहिमन नीति दोहावली	)७५
सन्त शब्दावली	१)५०

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।
डाक खर्च सब का अलग है।
पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

शिव साहित्य प्रकाशन मंडल

या

सम्पादक मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं०

श्री

सम्पादक व प्रकाशक—
देवीचरन मीतल
लेखराज नगर,
अलीगढ़।

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Alig